

ડી. વી. કૉલેજ, અમનગર મધુવની

નામ - મૌ મુન્ના,

①
દિનાંક - 25, 04, 2020

સહાયક પ્રાચાર્ય (અભિયંત્રિક શિક્ષક)

મૌઘિલી વિભાગ, BA-II

પારિજાતરૂપ

'પારિજાતરૂપ' મૌઘિલી નાટક વિકાસ મે યોગદાન

મૌઘિલી નાટક વિકાસ મે ઉમાપત્તિ 'પારિજાતરૂપ' મૌઘિલી નાટક એ મહત્વપૂર્ણ સ્થાન વારવેત આલે; ઊના ઇલિયુ ડુર્ક જમોતિરિશ્વલ, વિદ્યાપતિ, કવિ ગૌવિન્દ, રામદાસ, આ દેવાનન્દ મૌઘિલી નાટક વિકાસ મે વહુલ યોગદાન દેલનિ આલે | મુદા જાહિ રૂપક વ્યાપક સુદિમ વ્યવસ્થા પલ મૌઘિલી નાટક કે ઉમાપતિ આસિન કેલેન તાહિ રૂપક પ્રયત્ન આન ઢિયાર નહિ કડ સકલાટ, કે નાટક, હરિવંશ સં 124 આ 135 પર અધારિત આલે | માગવત પુરાન તથા વિષ્ણુ પુરાન મે સેરો હદિ કથાક ઉલ્લેખ મેલેત આલે |

હદિ નાટક કથા વસ્તુ શ્રી કૃષ્ણ દ્વારા સત્યમામકે માનક વક્ષાર્થે ઉઠાઓલ ગેલ યદિ કૃષ્ણ કલાપ પલ અધારિત આલે | હકલ કથા વસ્તુ બહુલ ઘોટ આલે | નારદ મુનિ હકલ પારિજાત નામક પુષ્પ શ્રી કૃષ્ણ કે કૃત વ્યર્થે, શ્રી કૃષ્ણ આ પુષ્પા અપન પત્નિ સમ્મળી કે દ કૃત વ્યર્થે | સનમ્મળી સાતમામા રાસિ રહેત વ્યર્થેન | ઊઠિ કાલક સત્યમામા મને બચાક વર્ણન નાટકકાલ ઉમાપતિ હદિ પ્રકારે કેને વ્યર્થે -

સત્યમામ . હરિ સંકે પ્રેમ આસ કથ લાઓલ પાઓલ પરિભવ ઠામે | જલધર વ્યારિ તર હમ સુતલકું આતપ મેલ પારિનામે | સરિવ દે મન જનુ કારિ આ મલાને અપના કરમે જલ હમ ઉપમોગવે |

तोहें क्रिअ तेजह पुरानी ॥ प्रथम विवाह ॥

महाराजि विरमाने

अथहि हरिसँ ॥ प्रेम-कदवाक जल प्रतिबुले प्राप्ता मेल
जलचरक व्याह मे कुतलै न मुला ताहि सँ आत
प्रेम त मेल । हे शारिक मन मे संतापि जनु कारि कर्माकुषाए
अपन जल के पाबि व्यथाक भागी बनी रहल छि ।
आहँ एहि हेतु प्राप । क्रियान तेजव पुरखक प्रित
यदपि ओ विरह गेलाह तथापि एहि बेर हुनकर
कोनो दोष नहि आछि । जे कतवी यतन सँ पीसला पर
पीष नहि मानैत आछि । आव कथमपि प्रेमक प्रदर्शन
नहि करता , पासण सहलौ बैद अमृतक रस मे मिजीला
पर कोमल नहि होयत छैक ।

एक दिस सत्यमामा व्यथा मे आछि कारण
जी कृष्ण सत्यमामा के पारिजात पुष्प नहि देलाथिन दोसर
दिस सत्यमामा बहुत खुश आछि । प्रेमक उल्लसता पर
पहुचल आछि । उमापति सत्यमामाक प्रेमवा उल्लसताक चर्चा
सत्यमामाक मुँह एहि नकाले नाटककाल कहैत आछि -

राक्षिणी - आज जन्म जल गेला । काम पहिलेजि हरि मोहिपुलक
पुजल बुलव टम गौरी । असा
आसा तनि पहि पूरालि मोरी ॥

गीतकार उमापतिजी मान आ विरह चित्रण करवा मे बेजोर
व्यभि विरह विपना नायिकाक (सत्यमामा) । विना अवस्था
चित्रण बर सस सप कौला आछि । ओहि विपना
अवस्था मे सँ-दर्शक परिवेक्षण कौल आछि । उदाहरण
स्वरूप कुष्ण पति कहल -

कि कहव माधव तनिके बिसेस
अपनहु तन चनि पाव कलेस ।
अपनुक आनन आरक्षि हेरी ।
पानक त्रस काप कत बेरी ॥

3
श्री कृष्ण की नव रसै सत्यनामक मानक रक्षार्थ रत्नक
व्यास सँ संपूर्ण पाणिजाल वृक्ष हरण कय क अनैत
व्यास तसि सँ सम्बन्धित आछि - स्टेज पर आ रंग-
मंच पर युद्ध के नहि देखाओल गेल आछि ।

नारद मुँहसँ युद्धक वर्णन कराओल गेल आछि ।

ई नाटक भाग एक अंकक आछि । गीतक
बाहुल्य आछि, पात्रक संख्या नटा आछि । कुल एहि
मे 21 गोट गीत आछि एकल नाम यदपि पाणिजाटल
नाटक आछि । तथापि एत. नाटकक जे लक्षणा कटल
गेल आछि तसि सँ लक्षित नहि आछि, कारण एक
भक्त संस्कृत नाटकक संस्कृत लक्षणा ग्रंथ मे नहि
मानल गेल आछि । मंगलगीत मे एक गोट भगवतीक
गीत आछि । एहि नाटकक समस्त समकाल गीत मे
नीटि आछि कथोपकथन संस्कृत एवं प्राकृत भाषा
मे आछि चरित्र चित्रपाक दृष्टिकोण सँ नारदक चरित्र
के प्रकाशित कैल गेल आछि । श्रीमद्भगवद्गीता
गीतक बाहुल्य रहितहुँ एहि नाटकक मुख्य रस
विर आछि । एहि नाटकक मुख्य उद्देश्य आछि
नाटकमे गीतक माध्यम सँ मनोरंजन प्राप्त कलाक ।